❍ 11 / 09 / 22 की मुरली से चार्ट ❍
⇛ TOTAL MARKS:- 100 ⇚

∬ 1 ∬ होमवर्क (Marks: 5*4=20)

➢➢ *योग और सेवा का बैलेंस रखा ?*

➢➢ *स्व सेवा और दूसरो की सेवा का बैलेंस रखा ?*

➢➢ *समान बनकर मिलन मनाया ?*

➢➢ *सर्व आत्माओं से संतुष्टता का सर्टिफिकेट प्राप्त किया ?*

────────────────────────

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

☆ *अव्यक्त पालना का रिटर्न* ☆

❂ *तपस्वी जीवन* ❂

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ *मैजॉरिटी भक्तों की इच्छा सिर्फ एक सेकेण्ड के लिये भी लाइट देखने की है, इस इच्छा को पूर्ण करने का साधन आप बच्चों के नयन हैं।* इन नयनों द्वारा बाप के ज्योतिस्वरुप का साक्षात्कार हो। *यह नयन, नयन नहीं दिखाई दें लाइट का गोला दिखाई दे।*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 2 ∬ तपस्वी जीवन (Marks:- 10)

>> *इन शिक्षाओं को अमल में लाकर बापदादा की अव्यक्त पालना का रिटर्न दिया ?*

✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚

✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚

☆ *अव्यक्त बापदादा द्वारा दिए गए* ☆

❂ *श्रेष्ठ स्वमान* ❂

✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚

✺ *"मैं सहजयोगी, कर्मयोगी आत्मा हूँ"*

〰✧ अपने को सहजयोगी अनुभव करते हो? सहज की निशानी क्या है? उसमें मेहनत नहीं होगी। वह सदा होगी, निरन्तर होगी। *मुश्किल काम होता है तो सदा नहीं कर सकते। जो सहज होगा वह स्वत: और निरन्तर चलता रहेगा। तो सहज योगी अर्थात् निरन्तर योगी। कभी साधारण, कभी योगी, ऐसे नहीं? योगी जीवन है तो जीवन सदा होता है। इसलिए योग लगाने वाले नहीं, लेकिन योगी जीवन वाले।*

〰✧ *ब्राह्मण जीवन है तो योग कभी नीचे-ऊपर हो ही नहीं सकता। क्योंकि सिर्फ योगी नहीं हो लेकिन कर्मयोगी हो। तो कर्म के बिना एक सेकण्ड भी रह नहीं सकते। अगर सोये भी हो तो सोने का कर्म तो कर रहे हो ना। तो जैसे कर्म के बिना रह नहीं सकते ऐसे योगी जीवन वाले योग के बिना रह नहीं सकते।* ऐसे अनुभव करते हो या योग टूटता है, फिर लगाना पड़ता है? फिर कभी लगता है, कभी टाइम लगता है-ऐसे तो नहीं है ना। योग का सहज अर्थ ही है याद। तो याद किसकी आती है? जो प्यारा लगता है। सारे दिन में देखो कि याद अगर आती है तो प्यारी चीज होती है। तो सबसे प्यारे से प्यारा कौन है? (बाबा) तो सहज और स्वत: याद आयेगा ना। अगर कहाँ भी, चाहे देह में, देह के सम्बन्ध में, पदार्थ में प्यार होगा तो बाप के बदले में वो याद आयेगा। कभी-कभी देह से प्यार हो जाता तो बॉडी कान्सेस हो जाते हो। तो चेक करना है कि सिवाय बाप के और कोई आकर्षित करने वाली वस्तु या व्यक्ति तो नहीं है?

〰✧ कर्मयोगी आत्मा का हर कर्म योगयुक्त, युक्तियुक्त होगा। अगर कोई भी कर्म युक्तियुक्त नहीं होता तो समझो कि योगयुक्त नहीं है। अगर साधारण कर्म होता, व्यर्थ कर्म हो जाता तो भी निरन्तर योगी नहीं कहेंगे। कर्मयोगी अर्थात् हर सेकण्ड, हर संकल्प, हर बोल सदा श्रेष्ठ है। तो सहज योगी अर्थात् कर्मयोगी और कर्मयोगी अर्थात् सहजयोगी। तो चेक करो कि सारे दिन में कोई साधारण कर्म तो नहीं होता? श्रेष्ठ हुआ? *श्रेष्ठ कर्म की निशानी होगी-स्वयं सन्तुष्ट और दूसरे भी सन्तुष्ट। ऐसे नहीं-मैं तो सन्तुष्ट हूँ, दूसरे हों या नहीं हो। योगी जीवन वाले का प्रभाव स्वत: दूसरों के ऊपर पड़ेगा। अगर कोई स्वयं से असन्तुष्ट है वा और उससे असन्तुष्ट रहते हैं तो समझना चाहिये कि योगयुक्त बनने में कोई कमी है।*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 3 ∬ स्वमान का अभ्यास (Marks:- 10)

➢➢ *इस स्वमान का विशेष रूप से अभ्यास किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

────────────────────────

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

❂ *रूहानी ड्रिल प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा की प्रेरणाएं* ☆

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ बेहद के वैराग्य वृत्ति का अर्थ ही है - वैराग्य अर्थात किनारा करना नहीं, लेकिन सर्व प्राप्ति होते हुए भी हद की आकर्षण मन को वा बुद्धि को आकर्षण में नहीं लावें। बेहद अर्थात *मैं सम्पूर्ण सम्पन्न आत्मा बाप समान सदा सर्व कर्मेन्द्रियों की राज्य अधिकारी।*

〰✧ इन सूक्ष्म शक्तियों, मन-बुद्धि-संस्कार के भी अधिकारी। *संकल्प मात्र

भी अधीनता ने हो।* इसको कहते हैं राजऋषि अर्थात बेहद की वैराग वृति। यह पुरानी देह वा देह की दुनिया वा व्यक्त भाव, वैभवों का भाव - इस *सब आकर्षण से सदा और सहज दूर रहने वाले।*

〰✧ जैसे साइन्स की शक्ति धरनी की आकर्षण से परे कर लेती है, ऐसे *साइलेन्स की शक्ति इन सब हद की आकर्षणों से दूर ले जाती है।* इसको कहते हैं - सम्पूर्ण सम्पन्न बाप समान स्थिति तो ऐसी स्थिति के अभ्यासी बने हो?

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

∫∫ 4 ∫∫ रूहानी ड्रिल (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर रूहानी ड्रिल का अभ्यास किया ?*

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

———————————————

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

❂ *अशरीरी स्थिति प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा के इशारे* ☆

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

〰✧ यह स्वीट साइलेन्स की अनुभूति कितनी प्यारी है। अनुभवी तो हो ना। एक सेकण्ड भी आवाज से परे हो स्वीट साइलेन्स की स्थिति में स्थित हो जाओ। तो कितना प्यारा लगता है? साइलेन्स प्यारी क्यों लगती है? क्योंकि आत्मा का स्वधर्म ही शान्त है, ओरिजनल देश भी शान्ति देश है। इसलिए आत्मा को स्वीट साइलेन्स बहुत प्यारी लगती है। एक सेकण्ड में भी आराम मिल जाता है। *कितने भी मन से, तन से थके हुए हों, लेकिन अगर एक मिनट भी स्वीट साइलेन्स में चले जाओ तो तन और मन को आराम ऐसा अनुभव होगा जैसे बहुत समय आराम करके कोई उठता है तो कितना फ्रेश होता है।*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 5 ∬ अशरीरी स्थिति (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर अशरीरी अवस्था का अनुभव किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

────────────────────────

∬ 6 ∬ बाबा से रूहरिहान (Marks:-10)
(आज की मुरली के सार पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- ब्रह्मा बाप से प्यार की निशानी-अव्यक्त फ़रिश्ता बनना"*

➳ _ ➳ *अपने ही घर में मीठे बाबा के कमरे में बैठी हुई मैं आत्मा... अपलक अपने प्यारे मीठे बाबा को निहार रही हूँ...* बाबा की वरदानी किरणों से शक्ति सम्पन्न बन रही हूँ... और मीठे चिंतन में खो रही हूँ... कि *प्यारे बाबा ने मुझे मेरे आत्मिक रूप का अहसास देकर... जीवन जीने की कला सिखा दी है...* स्वयं को देह समझकर जीना कितना दुखदायी था... और आत्मिक भाव ने मुझ आत्मा को किस कदर हल्का, प्यारा, सुखी कर, सच्चे आनन्द से भर दिया है... अब मैं आत्मा शिवबाबा की यादों में मदमस्त हो गयी हूँ...

❉ *मीठे बाबा ने मुझ आत्मा को सच्ची कमाई के गहरे राज समझाते हुए कहा :-"मीठे मीठे फूल बच्चे...* चलते फिरते हर कर्म करते... ईश्वर पिता की याद में रह... अपनी हर श्वांस को पिरो दो... और *हर कर्म में ब्रह्मा बाप को फॉलो कर... सदा निराकारी, निर्विकारी, निरहंकारी रहना और विश्व के आगे चित्रकार बन... बाप का चित्र दिखाने वाले बनो..."*

➳ _ ➳ *मैं आत्मा प्यारे बाबा से ज्ञान धन की दौलत पाकर खुशी से

नाचती हुई... बाबा से कहती हूँ :-"मेरे मीठे सिकीलधे बाबा... मैं आत्मा आपकी प्यार भरी छत्रछाया में खुशनुमा फूल बन खिल गयी हूँ...* गुणों और शक्तियों से सजधज कर बाप समान बन रही हूँ... ज्ञान रत्नों को पाकर मालामाल हो गयी हूँ..."

❉ *प्यारे बाबा ने मुझ आत्मा का रूहानी श्रृंगार करते हुए कहा :-"मेरे मीठे लाडले बच्चे... बाप की सदा यह आश रहती है कि हर बच्चा... हर कर्म में... हर संकल्प में... फॉलो फादर कर बाप समान... अव्यक्त फरिश्ता बने...* इसलिये तुम कर्मयोगी बन... अपने कर्मो के दर्पण द्वारा बाप का साक्षात्कार करवाओ..."

➳ _ ➳ *मैं आत्मा मीठे बाबा की मीठी मीठी बातों से पुलकित होकर... इठलाती हुई कहती हूँ :-"मेरे प्यारे बाबा... आपने मुझ आत्मा को पद्मापद्म... महान भाग्यशाली बना दिया है...* देह के भान में आकर मैं आत्मा गुणहीन, शक्तिहीन हो गयी थी... प्यारे बाबा आपने मेरा जीवन सत्य की रोशनी से भर दिया है... मैं आत्मा आपकी यादों में, हर कर्म को सुकर्म बनाती जा रही हूँ..."

❉ *प्यारे बाबा ने मुझ आत्मा को अपने प्यारे वजूद में गहरे डुबाते हुए कहा :-*"मीठे लाडले अथक सेवाधारी बच्चे... *चाहे किसी भी तरह के सरकमस्टांस तुम्हारी बुद्धि रूपी पाँव को हिलाने के लिये आये... लेकिन तुम सदा अचल, अडोल, नष्टोमोहा रहना... बोलना कम... करना ज्यादा, मुख द्वारा बताना नही... अपितु करके दिखाना है...* तभी तुम उड़ते पंछी बन उड़ सकोगे..."

➳ _ ➳ *मैं आत्मा मीठे बाबा से अखुट खजाने लेकर... समस्त विश्व की मालिक बनकर कहती हूँ :-"मीठे मीठे बाबा... आपने मुझ आत्मा के साधारण जीवन में आकर, जीवन को बेशकीमती बना दिया है...* मुझे जीवन जीने की कला सिखा दी है... मैं आत्मा ईश्वरीय यादों में अथाह खुशियों को अपनी बाँहो में भर रही हूँ... मीठे बाबा से प्यारी सी रूहरिहान कर मैं आत्मा... स्थूल तन में लौट आयी..."

———————————————————

∬ 7 ∬ योग अभ्यास (Marks:-10)
(आज की मुरली की मुख्य धारणा पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- योग और सेवा का बैलेंस रखना*

➳ _ ➳ अपने अव्यक्त फ़रिश्ता स्वरूप में, अव्यक्त वतन में, अपने अति मीठे अति प्यारे अव्यक्त बापदादा के सम्मुख बैठ उनके नयनों की भाषा को समझने का मैं प्रयास कर रही हूँ। *अपने प्यारे ब्रह्मा बाबा के नयनों में उनकी उस आश को मैं स्पष्ट महसूस कर रही हूँ जो बाबा को अपने हर ब्राह्मण बच्चे से है कि हर बच्चा कर्मयोगी, अथक सेवाधारी और वरदानी स्वरूप का प्रत्क्षय सैम्पल बन कर रहे ताकि हर बच्चे में बाप दिखाई दे*। बाबा के नयनों में समाई इस आश को पूरा करने की मन ही मन मैं स्वयं से प्रतिज्ञा करते हुए फिर से अपने प्यारे बापदादा की ओर देखती हूँ जो एकटक मुझे निहार रहें हैं जैसे मेरे मन की हर बात को जान गए हैं। *मन्द - मन्द मुस्कारते, स्वयं को निहारते हुए अपने प्यारे पिता को देख मैं मन ही मन प्रफुलित हो रही हूँ और अपने सर्वश्रेष्ठ भाग्य की सराहना कर रही हूँ*।

➳ _ ➳ अपने सर्वश्रेष्ठ भाग्य की स्मृति में खोई हुई मैं एक दृश्य देख रही हूँ। इस दृश्य में मुझे बाबा के दो स्वरूप दिखाई दे रहें हैं। एक बाबा का साकार स्वरूप जो बिल्कुल साधारण होते हुए भी विशेष है। *देख रही हूँ बाबा कैसे कर्मयोगी बन हर कर्म करते हुए एक दम लाइट स्थिति में स्थित है। स्वयं को निमित समझ हर कर्म करते हुए बाबा जैसे हर कर्म के बन्धन से मुक्त दिखाई दे रहें हैं*। एक दिव्य अलौकिक चमक बाबा के चेहरे पर स्पष्ट दिखाई दे रही है। कर्मयोगी के साथ अथक सेवाधारी बन बाबा हर सेवा निमित बन बिल्कुल हल्के रहकर करते जा रहें है। बस एक ही संकल्प की ये सेवा मेरी नही शिव बाबा की है। *सेवा में सम्पूर्ण समर्पणता का भाव ही बाबा को अथक बना कर

हर सेवा में सहज ही सफलतामूर्त बना रहा है। वरदानी स्वरुप का प्रत्क्षय सैम्पल बाबा के साकार स्वरूप में मैं बाबा के हर कर्म और हर सेवा में देख रही हूँ*।

➳ _ ➳ दूसरी तरफ मैं बाबा का अव्यक्त स्वरूप देख रही हूँ जो बहुत ही न्यारा और प्यारा है। बाबा का ये सम्पूर्ण स्वरूप देह के बन्धनों से परें बेहद की सेवा करता हुआ, विश्व की सर्व आत्माओं का कल्याण करता हुआ, अपने बच्चों को आप समान बनाने के लिए उन्हें अपना बल देकर आगे बढ़ाता हुआ और ज्ञान, गुण और शक्तियों के अखुट खजानो से अपने हर बच्चे को सदा भरपूर करता हुआ दिखाई दे रहा है। *बाबा के इस अव्यक्त स्वरूप में बाबा के बेहद सेवाधारी और महावरदानी स्वरुप को मैं देख रही हूँ। बाबा के साकार और अव्यक्त दोनों स्वरूपों को देख बाबा जैसा बनने की स्वयं से मैं फिर से प्रतिज्ञा करती हूँ और बाबा के सम्मुख बैठी अनुभव करती हूँ जैसे बाबा अपना वरदानी हाथ मेरे सिर पर रखकर मुझे कर्मयोगी, अथक सेवाधारी और वरदानीमूर्त भव का वरदान दे रहें है*।

➳ _ ➳ वरदान देकर अब बाबा मेरी प्रतिज्ञा को पूरा करने का बल मेरे अंदर भर रहें हैं। शक्तियों की रंग बिरंगी सुनहरी किरणो को बाबा के वरदानी हस्तों से निकल कर अपने अंदर समाते हुए मैं महसूस कर रही हूँ। सर्वशक्तियों की किरणों की मीठी फुहारें मेरे मस्तक को स्पर्श करके सीधी मुझ आत्मा में प्रवाहित होकर मुझे बलशाली बना रही हैं। *ऐसा लग रहा है जैसे आप समान बनाने के लिए बाबा अपनी शक्तियों का समस्त बल मुझमें भर रहें हैं। एक विशेष दिव्य शक्ति मैं अपने अंदर अनुभव कर रही हूँ। यह शक्ति मुझे बहुत ही लाइट और माइट स्थिति में स्थित कर रही है*। अपने सम्पूर्ण लाइट माइट स्वरूप के साथ बाबा से की हुई प्रतिज्ञा और अपने प्यारे ब्रह्मा बाप की आश को पूरा करने के लिए अब मैं वापिस साकारी दुनिया मे लौट आती हूँ और आकर अपने ब्राह्मण स्वरूप में स्थित हो जाती हूँ।

➳ ➳ अपने ब्राह्मण स्वरूप में स्थित होकर, अपने प्यारे ब्रह्मा बाप की

आश को पूर्ण करने और परमात्म कार्य को सम्पन्न करने का पुरुषार्थ अब मैं दृढ़ता के साथ कर रही हूँ। *अपने कर्मों के दर्पण द्वारा सबको बाप का साक्षात्कार कराने और बाप समान अव्यक्त फ़रिश्ता बन कर्मयोगी का पार्ट बजाने की अपने प्यारे बाबा की आश को पूरा करने के लिए मैं कदम - कदम पर उन्हें फॉलो कर रही हूँ*। उनके एक - एक कर्म को कॉपी करते हुए, उनके समान कर्मयोगी, अथक सेवाधारी और वरदानी स्वरुप का प्रतक्ष्य सैंपल बनने का पुरुषार्थ पूरी लगन के साथ करते हुए उनकी अमूल्य पालना का रिटर्न देने का मैं हर सम्भव प्रयास कर रही हूँ।

———————————————

∫∫ 8 ∫∫ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के वरदान पर आधारित...)

✺ *मैं कन्ट्रोलिंग पावर द्वारा तूफान को भी तोहफा बनाने वाली आत्मा हूँ।*
✺ *मैं यथार्थ योगी आत्मा हूँ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

———————————————

∫∫ 9 ∫∫ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के स्लोगन पर आधारित...)

✺ *मैं आत्मा सदैव योगयुक्त और युक्तियुक्त कर्म करती हूँ ।*
✺ *मैं विघ्न प्रूफ आत्मा हूँ ।*
✺ *मैं निर्विघ्न आत्मा हूँ ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने

का अभ्यास किया ?

∫∫ 10 ∫∫ अव्यक्त मिलन (Marks:-10)
(अव्यक्त मुरलियों पर आधारित...)

✺ अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ बापदादा बहुत बच्चों की रंगत देखते हैं - आज कहेंगे बाबा,ओ *मेरे बाबा, ओ मीठा बाबा, क्या कहूं, क्या नहीं कहूं ..... आप ही मेरा संसार हो,* बहुत मीठी-मीठी बातें करते हैं और दो चार घण्टे के बाद अगर कोई बात आ गई तो भूत आ जाता है। बात नहीं आती,भूत आता है। बापदादा के पास सभी का भूत वाला फोटो भी है। देखो, एक यादगार भी भूतनाथ का है। तो भूतों को भी बापदादा देखते हैं- कहाँ से आया, कैसे आया और कैसे भगा रहे हैं। यह खेल भी देखते रहते हैं। कोई तो घबराकर, दिलशिकस्त भी हो जाते हैं। फिर बापदादा को यही शुभ संकल्प आता है कि इनको कोई द्वारा *संजीवनी बूटी खिलाकर सुरजीत करें* लेकिन वे मूर्छा में इतने मस्त होते हैं जो संजीवनी बूटी को देखते ही नहीं हैं। *ऐसे नहीं करना। सारा होश नहीं गंवाना, थोड़ा रखना। थोड़ा भी होश होगा ना तो बच जायेंगे।*

✺ *ड्रिल :- "संजीवनी बूटी खाकर सदा सुरजीत रहना"*

➳ _ ➳ *इस शरीर रूपी डिब्बी के अन्दर हीरे समान चमकने वाली मैं आत्मा हूँ...* मन-बुद्धि रूपी नेत्रों से स्वयं के इस स्वरूप को स्पष्ट देख और अनुभव कर रही हूँ... मैं आत्मा देख रही हूँ स्वयं को इस दुनिया के सबसे पावरफुल स्थान मधुबन पांडव भवन के हिस्ट्री हाल में बापदादा के सामने, एक संगठन में बैठा हुआ... *ये वही स्थान है जहाँ स्वयं परम सत्ता शिव बाबा ने बहुत काल तक वास्तव्य किया है...* कई महान आत्माओं ने यहाँ बहुत काल तपस्या की है जिस कारण ये स्थान प्रचंड उर्जा से परिपूर्ण है... यहाँ पहुंच कर

मैं आत्मा भी स्वयं में इस प्रचंड उर्जा का प्रवाह अनुभव कर रही हूँ... और सहज ही अशरीरी अनुभव कर रही हूँ... *स्वयं को परमात्म-एनर्जी से भरा हुआ अनुभव कर रही हूँ... बेहद पावरफुल स्टेज का अनुभव हो रहा है...* देह भान से ऊपर उठ देही अवस्था का स्पष्ट अनुभव कर रही हूँ... देख रही हूँ मैं आत्मा हिस्ट्री हाल में *बापदादा संदली पर बैठ संगठन में बैठी आत्माओं को दृष्टि योग करा रहे हैं...*

➳ _ ➳ जैसे ही बाबा मुझ आत्मा को दृष्टि देते हैं... मुझ आत्मा के सामने एक दृश्य इमर्ज होता है... मैं आत्मा मन-बुद्धि रूपी नेत्रों से स्पष्ट देख रही हूँ... एक बहुत बड़ी नांव, एक विशाल सागर में जा रही है... जिस नांव पर बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा है... *"भगवान हमारा साथी है"*... और इस नाव में बहुत सारे यात्री स्वार हैं... और *स्वयं बाबा इस नैया के खिवैया बन इसे चला रहे हैं...* सभी यात्रियों के चेहरे बड़े हर्षितमुख है... सभी यात्री प्रभु महिमा के गीत गाते हुए खुशी में झूमते हुए अपने लक्ष्य की तरफ आगे बढ़ रहे हैं... इन सभी यात्रियों को देख लग रहा है मानो *बाबा ही इनका संसार है...* प्रभु महिमा से फुल ये आत्माएं हर्षा रही है और इस प्रकार ये नांव आगे बढती जा रही है... कुछ समय बीत जाने के बाद एक बड़ा अजब दृश्य सामने आता है... सागर में अचानक तूफान आता है... सागर में लहरें उठने लगती है... तेज हवाएं चलने लगती है... और नाव डोलने लगती हैं... कुछ यात्री जिनके चेहरे पर कुछ समय पहले खुशी थी... ये सीन देख उनके चेहरे पर घबराहट, चिंता, कई प्रकार के प्रश्नों के चिन्ह दिखाई दे रहे हैं... उनकी आँखों में डर और मुख से यह क्या, यह क्यों, यह कैसे शब्द निकल रहे हैं... और कुछ यात्री यह सीन देखते वैसे ही बैठे हैं जैसे पहले बैठे थे... *बाबा भी इस नांव में बैठ ये अजब दृश्य देख रहे है...*

➳ _ ➳ तभी वो दृश्य मुझ आत्मा की आँखों के सामने से गायब हो जाता है... मैं आत्मा सामने देखती हूँ... *महान ज्ञान सागर बाबा मुझ आत्मा को दृष्टि दे रहे हैं... बाबा की सागर जैसी आँखों से ज्ञान प्रकाश रूपी किरणें मुझ आत्मा के अन्दर समा रही है...* जैसे-जैसे मुझ आत्मा में ये ज्ञान प्रकाश रुपी

किरणें मेरे अन्दर समा रही है, इस दृश्य का राज मुझ आत्मा के सामने स्पष्ट होता जा रहा है... मैं आत्मा विचार कर रही हूँ... *जिस जीवन रुपी नैया का खिवैया स्वयं सर्वशक्तिमान बाबा है... वह जीवन रुपी नैया में भल बातों रुपी कितने भी तूफान आएं... ये नैया कभी डूब नहीं सकती है...*

➳ _ ➳ मैं आत्मा स्वयं से प्रश्न करती हूँ, अपने लक्ष्य की तरफ चलते-चलते, जब इस जीवन रूपी नैया में बातों रुपी भूत, बातों रुपी तूफान आते हैं तो कहीं मैं आत्मा लक्ष्य से भटक इन हलचल में तो नहीं आ जाती, घबरा तो नहीं जाती, बातों रूपी भूतों को देख भूतनाथ तो नहीं बन जाती ये जानते हुए भी की *इस जीवन रुपी नैया का खिवैया स्वयं बाबा है...* देखती हूँ सामने *बाबा से शक्तिशाली किरणों की अविरल धाराएँ मुझ आत्मा पर पड़ कर मेरे अन्दर समा रही है...*

➳ _ ➳ *मैं आत्मा बेहद शक्तिशाली महसूस कर रही हूँ...* देख रही मैं आत्मा बाबा ने अपना वरदानी हाथ मेरे सिर पर रख दिया... बाबा के हाथों से ज्ञान प्रकाश की किरणें मेरे अन्दर समा रही हैं... जैसे-जैसे ये ज्ञान प्रकाश की किरणें अन्दर समा रही है... *मैं आत्मा शक्तिशाली... अचल अडोल अवस्था का अनुभव कर रही हूँ, पहले से और ज्यादा शक्तिशाली स्वयं को अनुभव कर रही हूँ...* अब देखती हूँ अपनी इस जीवन रूपी नैया को जिसका खिवैया स्वयं बाबा है... और मैं आत्मा बाबा संग आगे बढ़ रही हूँ... और देख रही हूँ... बातों रूपी भूत, कभी एक लहर कभी दूसरी लहर के रुप में सामने आ रहे हैं... लेकिन *मैं स्मृति स्वरूप हूँ... महावीर हूँ... अब ये बातें आती है और चली जाती है... मैं आत्मा एकरस अचल-अडोल होकर बाबा संग अपने लक्ष्य की ओर अभय होकर बढ़ रही हूँ...* मैं आत्मा अन्य आत्माओं को भी जो चलते-चलते, किसी-न-किसी बातों रूपी भूतों के कारण रुक गए हैं, बेहोश होकर अपने लक्ष्य से भटक गए है... उन्हें *ज्ञान और याद रूपी संजीवनी बूटी से सुरजीत बना रही हूँ...* देख रही हूँ अब वे सभी आत्माएं अचल-अडोल एकरस होकर इस जीवन रूपी नैया में *बाबा संग अपने लक्ष्य की ओर बढ़ रही है... शुक्रिया लाडले बाबा शुक्रिया...*

⊙_⊙ आप सभी बाबा के प्यारे प्यारे बच्चों से अनुरोध है की रात्रि में सोने से पहले बाबा को आज की मुरली से मिले चार्ट के हर पॉइंट के मार्क्स ज़रूर दें ।

♔ ॐ शांति ♔